विदर्भ में पहली बार कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र में मिला प्रतिष्ठित बायोटेक्नोलॉजी इग्निशन ग्रांट

अब 'भोजन ही बनेगा औषधि'

अमरावती की कंपनी को केंद्र से 50 लाख की जैव प्रौद्योगिकी ग्रांट

डॉ. मधुर मोटवानी और डॉ. प्रियदर्शिनी सन्याल के शोध से किसानों की उपज को मिलेगी नई पहचान

प्रतिनिधि/ प्रतिदिन अखबार

अमरावती, 4 अक्टूबर– खेती और कृषि उपज के लिए देशभर में पहचाने जाने वाले विदर्भ के लिए अब विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी नई संभावनाओं के द्वार खुल रहे हैं. अमरावती से शुरू हुई प्रॉक्सी फार्मा प्राइवेट लिमिटेड ने राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से 50 लाख रुपये का प्रतिष्ठित बायोटेक्नोलॉजी इग्निशन ग्रांट (बीआईजी) प्राप्त किया है. कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र की श्रेणी में यह अनुदान हासिल करने वाली कंपनी विदर्भ की पहली कंपनी बन गई है. इस उपलब्धि से अमरावती के नवाचार और उद्यमिता क्षेत्र को राष्ट्रीय पहचान मिली है.

चिकित्सक वैज्ञानिक डॉ. मधुर मोटवानी और डॉ. प्रियदर्शिनी सन्याल द्वारा स्थापित प्रॉक्सी फार्मा को यह अनुदान बायोटेक्नोलॉजी इंडस्ट्री रिसर्च असिस्टेंस काउंसिल (बीआईआरएसी) के 24वें कॉल के अंतर्गत वर्ष 2026 में मिला है. इस परियोजना की अवधि 18 महीने निर्धारित की गई है. इसके तहत स्थानीय कृषि उपज को आधुनिक जैव प्रौद्योगिकी और खाद्य प्रसंस्करण तकनीकों के माध्यम से ऐसे स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थों में विकसित करने पर अनुसंधान होगा, जो भविष्य में पोषण और स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं. इस परियोजना की सबसे बड़ी विशेषता इसका 'फूड ऐज मेडिसिन' यानी 'भोजन ही औषधि' का दृष्टिकोण है. कंपनी का उद्देश्य किसानों द्वारा उत्पादित फल, सब्जियों और रेशेदार खाद्य पदार्थों को वैज्ञानिक अनुसंधान के जरिए ऐसे सुविधाजनक खाद्य उत्पादों में बदलना है, जो मधुमेह, मोटापा और चयापचय संबंधी स्वास्थ्य की चुनौतियों से निपटने में सहायक हो सकते हैं. इस दिशा में स्थानीय कृषि उपज का मूल्यवर्धन करते हुए खाद्य विज्ञान, पोषण और आधुनिक तकनीक के बीच नया तालमेल विकसित करने की कोशिश की जा रही है. प्रॉक्सी फार्मा को मिली इस सहायता से कृषि उपज से तैयार फ्रीज-ड्राइड खाद्य पदार्थों पर विशेष अनुसंधान किया जाएगा. इसमें ऐसे उत्पादों के विकास पर ध्यान दिया जाएगा, जो पाचन तंत्र, मेटाबॉलिज्म और समग्र स्वास्थ्य के लिहाज से उपयोगी पोषण उपलब्ध करा सकें.

इन उत्पादों के स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों को वैज्ञानिक शोध और परीक्षणों के माध्यम से प्रमाणित करना भी परियोजना का महत्वपूर्ण हिस्सा होगा.

फ्रीज-ड्राइंग तकनीक से सुरक्षित रहेंगे फल और सब्जियां

- प्रॉक्सी फार्मा की इस पहल में फ्रीज-ड्राइंग यानी हिम-शुष्कीकरण तकनीक की अहम भूमिका है. इस तकनीक में खाद्य पदार्थों को कम तापमान पर जमाने के बाद नियंत्रित परिस्थितियों में उनमें मौजूद बर्फ को सीधे वाष्प में परिवर्तित किया जाता है.
- इससे खाद्य पदार्थों में नमी कम होती है और उन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखने में मदद मिलती है. साथ ही, उनका वजन कम होने से भंडारण, परिवहन और उपयोग भी सुविधाजनक हो जाता है.



पहले भी राष्ट्रीय स्तर पर मिल चुका है सम्मान

प्रॉक्सी फार्मा के लिए यह पहली राष्ट्रीय उपलब्धि नहीं है. इससे पहले कंपनी को केंद्र सरकार की स्टार्टअप इंडिया सीड फंड योजना के अंतर्गत भी वित्तीय सहायता मिल चुकी है. जनवरी 2026 में कंपनी ने राष्ट्रीय स्टार्टअप पुरस्कार के खाद्य एवं पेय क्षेत्र की 'ट्रेलब्लेजर' श्रेणी में सम्मान हासिल किया था. इस उपलब्धि के बाद कंपनी के संस्थापक डॉ. मधुर मोटवानी और डॉ. प्रियदर्शिनी सन्याल को स्टार्टअप इंडिया के 10 वर्ष पूरे होने के राष्ट्रीय समारोह के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात करने का अवसर भी मिला था.

डॉ. मधुर मोटवानी और डॉ. प्रियदर्शिनी सन्याल की पहल यह संभावना प्रस्तुत करती है कि विदर्भ केवल देश के लिए खाद्यान्न और कृषि उत्पादों का उत्पादन करने वाला क्षेत्र ही नहीं, बल्कि भविष्य के खाद्य पदार्थों के विकास में वैज्ञानिक योगदान देने वाला केंद्र भी बन सकता है.

'पोषण फर्स्ट' ब्रांड के जरिए बाजार तक पहुंचेगा शोध

प्रॉक्सी फार्मा अपने उपभोक्ता ब्रांड 'पॉशन' अथवा 'पोषण फर्स्ट' के माध्यम से फल, सब्जियों और फाइबर से भरपूर खाद्य पदार्थों को आधुनिक पोषण अनुसंधान से जोड़ रही है. कंपनी का विशेष जोर आंतों के स्वास्थ्य, पाचन और मेटाबॉलिज्म से जुड़े पहलुओं पर है. बायोटेक्नोलॉजी ग्रांट के तहत विकसित होने वाले उत्पादों को इसी दिशा में आगे बढ़ाया जाएगा. कंपनी का लक्ष्य ऐसे खाद्य विकल्प तैयार करना है, जिन्हें आधुनिक जीवनशैली में आसानी से शामिल किया जा सके और जो संतुलित पोषण के साथ बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में सहायक हों.